अवसर का निर्माण

Avasarak Nirman, written (Maithili)
translated into Hindi by Shambhu Kumar Singh

(1)

धनमा का थोबड़ा देखकर ही मैं समझ गया कि आज फिर उसकी धुनाई हुई है।

प्रो. साहब के यहाँ नौकरी करते हुए धनमा का यह चौथा महीना था। इसका बड़ा भाई भी इन्हीं के यहाँ दो वर्षों से काम कर रहा था, पिछले महीने ही उसका स्थानान्तरण प्रो. साहेब के छोटे भाई के यहाँ झरिया हो गया। धनमा का भाई ही उसे पिछले तीन महीने से ट्रेनिंग दे रहा था, बर्तन-बासन से लेकर खाना पकाना, झाड़ू **लगाना**, कपड़ा-लत्ता साफ करना आदि। सभी गुण तो उसने सीख लिया था पर सब्जी में नमक देने का ठिकाना उसे अबतक नहीं रहता। इसी कारण से उसे कभी-कभी धुनाई सहना पड़ता था।

बारह वर्ष का धनमा देखने में एकदम गोरा-चिट्टा। दप-दप उजले सर्ट को जब वह सिलेठी रंग के हाफ-पैंट के नीचे बिना बेल्ट का ही डोराडोर चढ़ा अंडरसेटिंग करता तो ऐसा लगता मानो किसी अंग्रेजी स्कूल का छात्र हो। वैसे वह चौथी कक्षा तक पढ़ा भी था। उसके बाप ने कहा था "गरीब का बेटा अब इससे ज्यादा पढ़कर क्या करेगा? जाओ नौकरी करो, घर में दो पैसे का मदद हो जाएगा।"

न जाने क्यों मुझे धनमा से स्नेह हो गया। इसलिए जब-जब मैं प्रो. साहेब के डेरा पर रात को ठहरता, धनमा से भरपेट गप्प-सप्प करता। बच्चा जात, पहली बार घर से निकला था, सो जब-जब उसे अपने माँ-बाप की याद आ जाती वह

बिलख-बिलख कर रोने लगता। उसका रोना और उसकी मनोदशा देखकर मुझे उसपर दया आ जाती। उसपर दया होने कारण, मुझमें और धनमा में एक समानता थी। धनमा भी अपने परिवार के लिए नौकरी करता था और मैं भी अपने परिवार के लिए नौकरी करता था। अंतर बस यही था कि धनमा की उम्र थी 13 और मेरी उम्र थी 25 साल। धनमा अपने पगार का सारा पैसा अपने माँ-बाप को दे देता था और मैं अपने पगार में से कुछ बचाकर पढ़ाई भी करता था। मैं अभी एम. ए. का छात्र था।

वैसे तो धनमा सब दिन ड्राइंग-हॉल में सोता था पर उस रात वह मेरे ही पलंग के नीचे अपनी चटाई-दरी बिछाकर सो गया। जब रात निःशब्द हो गयी, प्रो. साहब अब सो गए होंगे ऐसा जानकर धनमा ने मुझे टोका—“अच्छा भाइजी, टाटा का नमक और नमक से ज्यादा नमकीन होता है क्या?”

“नहीं तो!”

नहीं भाइजी मैं यह नहीं मानूँगा, इससे पहले हमारे यहाँ ‘कैप्टन कूक’ नमक आता था, सब्जी में दो चम्मच भी दे देता तो भी मालिक और मालकिन कुछ भी नहीं बोलती थी। ये स्साला टाटा का नमक जब से आया है तब से मुझे इसका कोई अंदाजा ही नहीं रहता। डेढ़ चम्मच दीजिए तो भी जहर एक चम्मच दीजिए तो भी जहर। इसी नमक के चलते मुझे इतनी मार खानी पड़ती है।

अच्छा एक बात बताओ धनमा—“तुम्हारे यहाँ टाटा का नमक कब से आ रहा है?”

“एक महीने से।”

“इस एक महीने में तुझे कितनी बार मार लगी है?”

“इसी बार।”

“बस! इसका मतलब हुआ कि गलती तुम्हारी है, नमक का नहीं।”

और मेरे मालिक की कोई गलती नहीं है? वो नहीं समझ सकते हैं कि बच्चा है एक दिन गलती ही हो गई तो क्या होगा, इस तरह की छोटी-छोटी गलतियों के लिए ऐसी मार? उनका बेटा भी तो मेरा ही हमउम्र है उन्हें क्यों नहीं मारते? जानते हैं भाइजी, कल ही गणेश मेरा 30 रू. चुराकर आइसक्रीम खा गया, लेकिन चोरी-जैसा अपराध करने के बाबजूद मालिक ने उसे कुछ नहीं कहा।

तुम्हारा 30 रू. चुरा लिया! तुम्हारे पास पैसे कहाँ से आए?

हुँ-हुँ! भाइजी मेरे पास 93 रू. है। मालिक के यहाँ यदा-कदा जो अतिथि लोग आते रहते हैं मैं ही उनका अटैची-बैग आदि नीचे तक ले जाता हूँ उनमे से कई लोग मुझे कभी-कभी पाँच-दस रू. दे देते हैं। ये रूपये मैं अपने मालकिन को रखने दे देता हूँ। उस घर में आपने स्नो का एक उजला डिब्बा देखा है? मेरे सभी रूपये उसी डब्बे में रहता है। जिस दिन 100 रू. पूरे हो जाएँगे मैं अपने छोटी बहन के लिए एक फ्रॉक खरीदूँगा। गणेश मेरे उसी पैसे में से कल चोरी कर लिया था।

अच्छा कोई बात नहीं, प्रो. साहेब ने गणेश को कुछ नहीं कहा इसका मतलब हुआ कि आगे **चलकर** गणेश का संस्कार खराब हो जाएगा। तू तो चोरी नहीं करता न! इसलिए तेरा संस्कार अच्छा हो जाएगा। अभी तुम बच्चे हो ये सभी बातें अभी नहीं समझ पाओगे।

भाइजी मैं सारी बातें समझता हूँ। गणेश पढ़ाई कर रहा है उसका संस्कार कितना भी खराब क्यों न हो जाय वह बाबू ही कहलाएगा और धनमा, धनमा ही रह जाएगा।

ऐसी बात नहीं है धनमा, गुलटोपी को पहचानते हो? वो कितना पढ़ा-लिखा है जानते हो? नहीं न! वो अंगूठा छाप है, अंगूठा छाप! और देखते हो वो कैसी चमचमाती हुई गाड़ी पर चढ़ता है? उसका मुंशी बी. ए. पास है। गुलटोपी एक ठिकेदार है। लोगों में बस मेहनत, लगन और ईमानदारी होनी चाहिए वो कभी भी कुछ भी कर सकता है। ये सारी बातें तुम अभी नहीं समझ पाओगे थोड़ा और बड़े हो जाओगे तो सारी बातें समझ में आ जाएगी।

“................................”

“अच्छा भाइजी, आप भी गरीब हैं क्या?”

“तुम्हें किसने कहा?”

प्रो. साहेब एकदिन बोल रहे थे कि “विवेक बहुत ही गरीब है। कमा कर घर भी देखता है और पढ़ता भी है।”

“हाँ, ठीक ही कहा उसने।”

तो आप मैथिली क्यों पढ़ते हैं, साइंस क्यों नहीं पढ़ते? साइंस पढ़कर लोग डॉक्टर, इंजीनियर बनते हैं, ऐसा प्रो. साहब कहते हैं। वो कह रहे थे, “बेचारा साइंस कहाँ से पढ़ सकेगा? ट्यूशन के लिए रूपये कहाँ से लाएगा? इसलिए मैथिली पढ़ रहा है।” अच्छा भाईजी, एक बात बताईए, मैथिली बहुत खराब विषय है क्या?

ना रे बेअक्ल! भाषा कोई भी खराब नहीं होती। भाषा के विषय में ऐसी सोच रखने वाले खराब होते हैं। अच्छा तुम एक बात बताओ, “यदि तुम्हें मैथिली बोलने नहीं आती तो क्या तुम मुझसे बात कर सकता था?”

नहीं भाईजी! वो तो सत्य है, प्रो. साहेब झूठ ही बोल रहे थे। उनको मैं प्रायः देखता हूँ कि वे प्रो. लोगों के साथ मैथिली बोलते-बोलते अंगरेजी में न जाने क्या गिटिर-पिटिर, गिटिर-पिटिर बोलने लगते हैं।

अच्छा भाइजी, आप एक बात मुझे बताइए, मैथिली पढ़ के आप कभी प्रो. बन सकते हैं क्या?

हाँ, क्यों नहीं।

तब तो आप निश्चय ही प्रो. बनिएगा भाइजी।

धत्! बुड्ढा कहीं का।

भाइजी, एक बात मुझे और बताइए, "गरीब लोग क्या कभी अमीर बन सकता है?"

"एकदम बन सकता है।"

धनमा थोड़ी देर तक चुप रहा और पता नहीं कब उसे नींद आ गई।

(2)

मैं साल भर से दिल्ली के एक प्राइवेट कम्पनी में काम कर रहा हूँ। प्रेमनगर से लाजपतनगर तक प्रायः बस से ही आना-जाना होता है, कभी-कभार लोकल ट्रेन से भी चला जाता हूँ। अतिरिक्त कार्यभार के कारण आज कम्पनी में कुछ ज्यादा समय के लिए रूकना पड़ा था सो थोड़ी भूख लग गई थी, इसलिए पापड़-पापड़ शब्द सुनकर पापड़वाले को बुलाया-"ऐ पापड़वाले! एक पापड़ देना।" पापड़वाला मेरे सामने आया, मुझे एक पापड़ दिया। मैं जैसे ही पैसा देने लगा कि वो पापड़वाला मेरे पैरों पर गिर गया और बड़े ही दुःखी स्वर में बोला – "भाइजी, आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं धनमा।" ध्यान से देखा तो वह धनमा ही

था। मुझे थोड़ी ग्लानि भी हुई। मैं तत्क्षण उठकर धनमा को गले से लगा लिया और दोनों ही व्यक्ति भाव-विभोर हो गए। मैंने धनमा को अपने बगल में बिठाते हुए पूछा- "कहो धनमा, क्या हाल-चाल है, यहाँ कैसे?"

उसने कहा- "भाइजी आपको कुछ स्मरण है मेरा मार? वो रात?" मैं वहाँ मार खाते-खाते तंग हो गया था। सब्जी में नमक ज्यादा हो गया तो मार, कम हो गया तो मार, कपड़ा में कहीं दाग रह गया तो मार...। भाइजी उस अंतिम रात को जब मुझे आपसे भेंट हुई थी उसके सुबह की ही बात है, प्रो. साहेब के डेरा के नीचे जो चाय की दुकान थी हलाल खान की, उसका बेटा दिल्ली में दर्जी का काम करता है। उसीसे उसदिन मेरी भेंट हुई तो उसने कहा-"चलो मेरे साथ दिल्ली, वहाँ बैठे-बैठे कपड़े में काज-बटन लगाना, खाने-पीने के अलावा पाँच सौ रूपया महीना दूँगा।" मेरे पास भाड़ा के लायक रू. तो था ही सो उसी दिन मैं भाग गया वहाँ से। तीन महीने तक मैं उसी के दुकान पर रहा। उस दुकान के बगल में ही एक पापड़वाला रहता था जिसके यहाँ मैं प्रतिदिन देखता था कि मेरे ही उम्र के कई बच्चे लोग थोक-का थोक सेंका हुआ पापड़ ले जाते थे। एकदिन मैं यूँ ही उस दुकान पर चला गया तो भाईसाहब (पापड़वाले) ने मुझसे कहा- "पापड़ बेचोगे? देखते हो ये लोग तुम्हारी ही उम्र के हैं, 100 रू. रोज कमाता है। इसमें पूँजी भी तुम्हारी नहीं लगेगी, बस यहाँ से सेंका हुआ पापड़ ले जाओ, घूम-घूमकर बेचो और शाम को पैसा जमा कर दो। एक पापड़ का तुमको 50 पैसा देना होगा, उस पापड़ को तुम 2 रू. में बेचो। मतलब एक पापड़ पर तुमको 1.50 पैसा बचेगा, जितना बेचोगे उतना कमाओगे।" मुझे यह बिजनेस जँच गया। मैं दूसरे ही दिन से पापड़ बेचने लगा। पहले कुछ दिनों तक तो मैं करोलबाग तक ही रहता था लेकिन अब तो दिल्ली का शायद ही कोई कोना होगा जहाँ मैं नहीं गया होउँगा। अभी मेरा दो बिजनेस चल रहा है भाइजी। सुबह 8 बजे से 11 बजे तक राममनोहर लोहिया अस्पताल के सामने नारियल बेचता हूँ, जिसमें एक पीस पर लगभग 50 पैसा तक बच जाता है। दो सौ पीस तो निदान बेच ही लेता

हूँ। शाम 4 बजे से रात के 9 बजे तक बस, लोकल ट्रेन, पार्क आदि जगहों पर पापड़ बेचता हूँ जहाँ चार-पाँच सौ पीस तक बेच ही लेता हूँ। मैं मन-ही-मन हिसाब लगाने लगा, “नारियल में 100रू. और पापड़ में चार ड्योढे 600 रू.। इसका मतलब हुआ कि धनमा की दैनिक कमाई अभी 700 से 800 रू. तक है।”

धनमा आगे कहता गया—भाइजी, मैंने तीन साल तक अपने घर में कोई चिट्ठी-पत्री नहीं दिया और न ही किसी को कोई जानकारी ही कि, मैं कहाँ हूँ। मेरे माँ-बाबूजी और गाँव-समाज के लोग समझते कि “धनमा कहीं मर-हर गया।” तीन साल के बाद मैं गाँव गया। वहाँ दो कमरे का पक्का मकान बनाया। बाबूजी को तीन बीघा खेत खरीदवा दिया। एक जोड़ा बैल और एक पंपसेट भी खरीद दिया बाबूजी को। अगले महीने मैं एक ट्रैक्टर खरीदने की सोच रहा हूँ। मेरा बड़ा भाई भी अब गाँव में ही रहकर खेती-बारी का काम देखता है। प्रो. साहब के भाई के यहाँ से मैंने उन्हें भी चाकरी छुड़वा दिया। मेरी बहन अभी मिल्लत स्कूल, दरभंगा में पढ़ती है। अभी वो दशवीं कक्षा की छात्रा है। पढ़ने मे बड़ी ही मेधावी है, हर साल अपने कक्षा में प्रथम ही आती है। कहती है—“डॉ. बनूँगी।” मुझे पूरा विश्वास है भाइजी, मैं उसे डॉक्टर बना ही दूँगा। धनमा आगे बोला—“अब आप अपने बारे में कुछ बताईए भाइजी, आप यहाँ कैसे?”

मैं यहाँ पिछले **एक** साल से हूँ, एक प्राइवेट कम्पनी में काम कर रहा हूँ। मेरा वेतन है 5,000 रू. मासिक।

“केवल पाँच हजार! इस राशि में दिल्ली जैसे शहर में आप कैसे गुजारा करते हैं भाइजी?”

धनेसर! तुझे तो पता है ही न कि मैंने मैथिली से एम. ए. किया था। मैथिली का सर्टिफिकेट लेकर पूरे दिल्ली को छान मारा, इस शहर में भाषा नहीं टेक्निकल ज्ञान का ज्यादा महत्व है।

धनमा थोड़ी देर के लिए चुप-सा हो गया...,वह बोला—भाइजी, आपने तो ऐसी बातें कह दी कि मेरे समझ में ही नहीं आ रहा है कि मैं आपको क्या जबाब दूँ। अब आज मैं आपको नहीं छोड़ने वाला हूँ, आज आपको मेरे डेरा पर जाना ही होगा।

धनमा ने मुझे विवश कर दिया, उस दिन मैं करोलबाग स्टेशन पर ही उतर गया।

धनमा का डेरा करोलबाग स्टेशन के करीब ही था।

उस छोटे-से घर के एक कोने में खाना बनाने का बर्तन-बासन था, दूसरी ओर कपड़ा-लत्ता, बिछावन आदि और शेष भाग में एक बहुत बड़ा सा रैक जिसमें किताबें ठूँस-ठूँस कर भरे पड़े थे। उसके बिछावन पर मैथिली की कई पत्र-पत्रिकाएँ बिखरी पड़ी थी, जिसे देख मुझे थोड़ा अचरज हुआ। धनमा हमारी मनोदशा को भाँप गया। उसने कहा—"'निश्चिन्त रहिए भाइजी, यह डेरा मेरा ही है। मैं आपको यहाँ कतई नहीं लाता ज्योंहि आपने यह बोल दिया कि मैथिली से एम. ए. ... । भाइजी मुझे आपके द्वारा दिया गया वो सब उपदेश अभी तक याद है। आपही ने एकदिन मुझसे कहा था कि, प्रेमचंद गणित में फेल कर गए थे, जयशंकर प्रसाद, पाँचवी कक्षा तक की औपचारिक शिक्षा के बाद केवल स्वाध्याय के बल पर इतने सारे साहित्य का सृजनकर्ता बने, गुलटेन अंगूठा छाप है और..., भाषा कोई भी खराब नहीं होती...,मेहनत, लगन, ईमानदारी से...। भाइजी आप मैथिली के धनेसर कामत को जानते हैं?"

हाँ, मैंने उनकी कुछ रचनाएँ पढ़ी है, चेहरे से मैं उन्हें नहीं जानता।

तो फिर लीजिए, आज चेहरा भी देख लीजिए—मैं ही हूँ आपका धनेसर कामत। भाइजी, मैंने आपही से प्रेरणा लेकर आज स्वाध्याय के बल पर मैथिली साहित्य मध्य धनेसर कामत के नाम से ख्यात हूँ। भाइजी, मैं प्रतिमाह उतना रू. कमा लेता हूँ जितना प्रो. साहेब का मासिक वेतन है। आप पढ़े-लिखे लोग हैं,

5,000 को 50,000 में कैसे बदला जाय? सो आप सोच सकते हैं। मुझे माफ कीजिएगा भाइजी, छोटी मुँह बड़ी बातें। जहाँ तक मुझे लगता है, आप अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कुछ भी नहीं मिलने वाला है, कुछ भी नहीं कर पाइएगा, भाइजी, अवसर का निर्माण कीजिए निर्माण... ।

मैं मन ही मन सोचने को बाध्य हो गया कि 18 वर्षीय अनपढ़ (?) धनमा अच्छा या फिर मेरे जैसा 30 वर्षीय मैथिली का स्नातकोत्तर?